देहरादून के रंग: कबीर का सफर

poonam Naithani

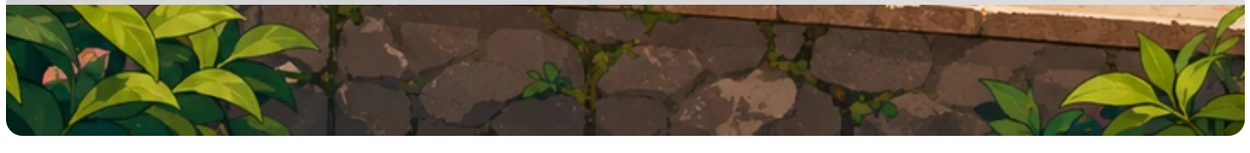

कबीर अपनी खिड़की से बाहर देखता है जहाँ सुबह की धूप हिमालय की पहाड़ियों को छू रही है। उसके हाथ में दादाजी की पुरानी जादुई डायरी है, जिसमें देहरादून शहर के खूबसूरत किस्से और नक्शे छुपे हुए हैं।

कबीर सबसे पहले शहर के दिल, यानी ऐतिहासिक क्लॉक टाव

के सामने खड़ा होता है। दादाजी ने लिखा था कि इस घंटाघर की छ

घड़ियाँ पूरे शहर को एक सुर में बाँधती हैं, जहाँ लोग हिंदी, गढ़वाली अं

जौनसारी भाषाओँ में बातें करते हैं।

भीड़भाड़ वाले पलटन बाज़ार में कदम रखते ही कबीर को मसाल और ताज़ा ऊनी कपड़ों की महक आती है। यहाँ रंग-बिरंगी चूड़ियाँ औ कलाकृतियाँ हर कोने को जीवंत बना रही हैं, और लोग मुस्कुराते हुए एक-दूसरे का स्वागत कर रहे हैं।

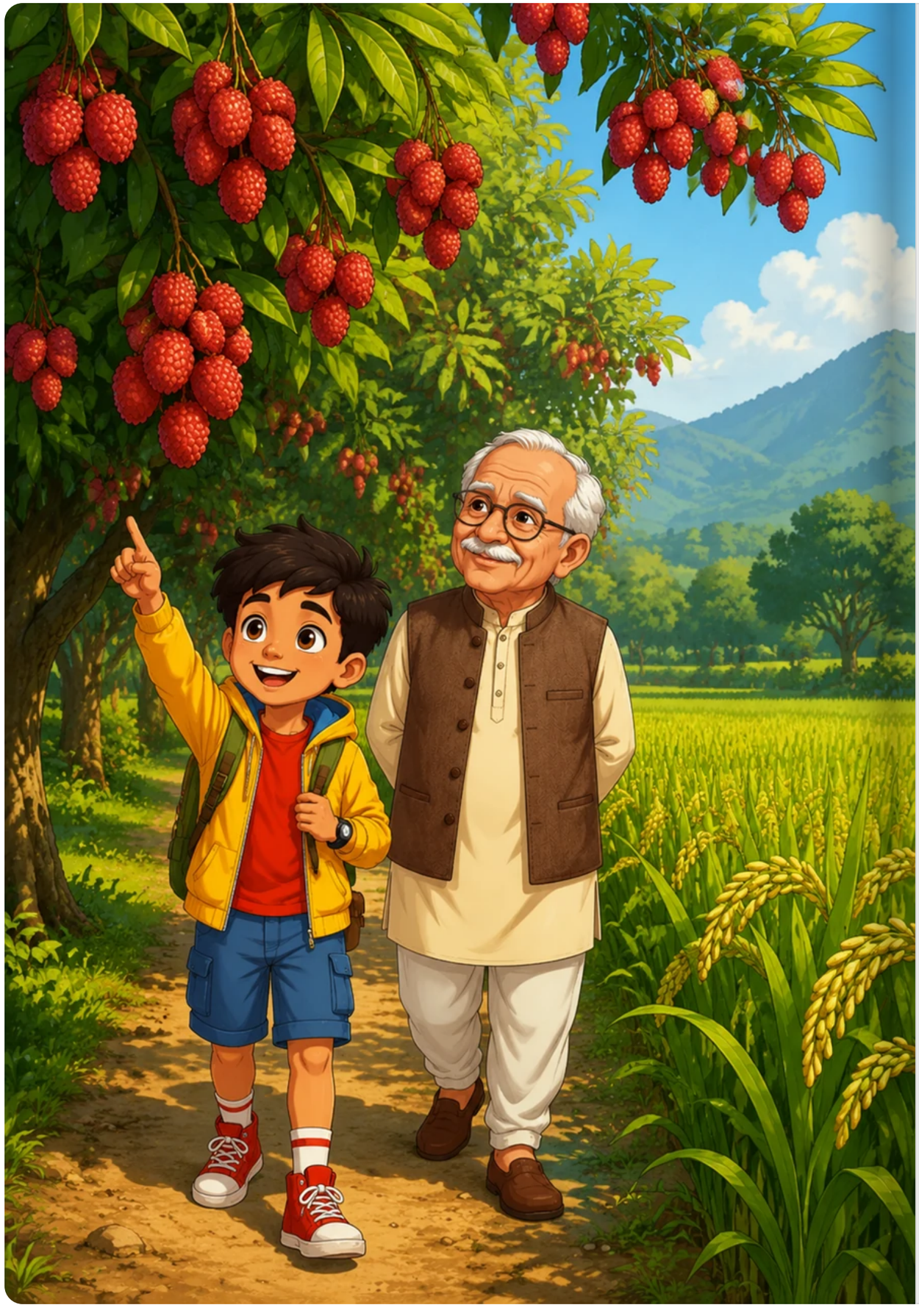

चलते-चलते कबीर को मीठी महक एक बाग की तरफ ले जार्त है, जहाँ पेड़ों पर लाल-रसीली लीचियों के गुच्छे लटके हुए हैं। देहरादू की यह मशहूर लीची और खेतों में लहलहाते बासमती चावल के पौधे यहाँ की धरती का असली खजाना हैं।

कबीर प्रसिद्ध टपकेश्वर महादेव मंदिर पहुँचता है, जहाँ एक गुफ के भीतर प्राकृतिक रूप से शिवलिंग पर पानी की बूंदें टपक रही हैं। य बहती तमसा नदी की कल-कल और घंटियों की आवाज़ मन को एक अनोखी शांति देती है।

दोपहर की भूख मिटाने के लिए कबीर एक छोटी सी दुकान पर रुकता है जहाँ गरमा-गरम कंदली का साग, झंगोरे की खीर और मंडुए की रोटी परोसी जा रही है। गढ़वाली खाने का पहला निवाला लेते ही कबीर का चेहरा ख़ुशी से खिल उठता है।

अपनी सैर को आगे बढ़ाते हुए वह माइंड्रोलिंग मोनेस्ट्री के शांत परिसर में कदम रखता है। यहाँ का विशाल स्तूप और हवा में लहराते बौद्ध प्रार्थना झंडे शहर की साझी संस्कृति और अमन का संदेश देते हैं।

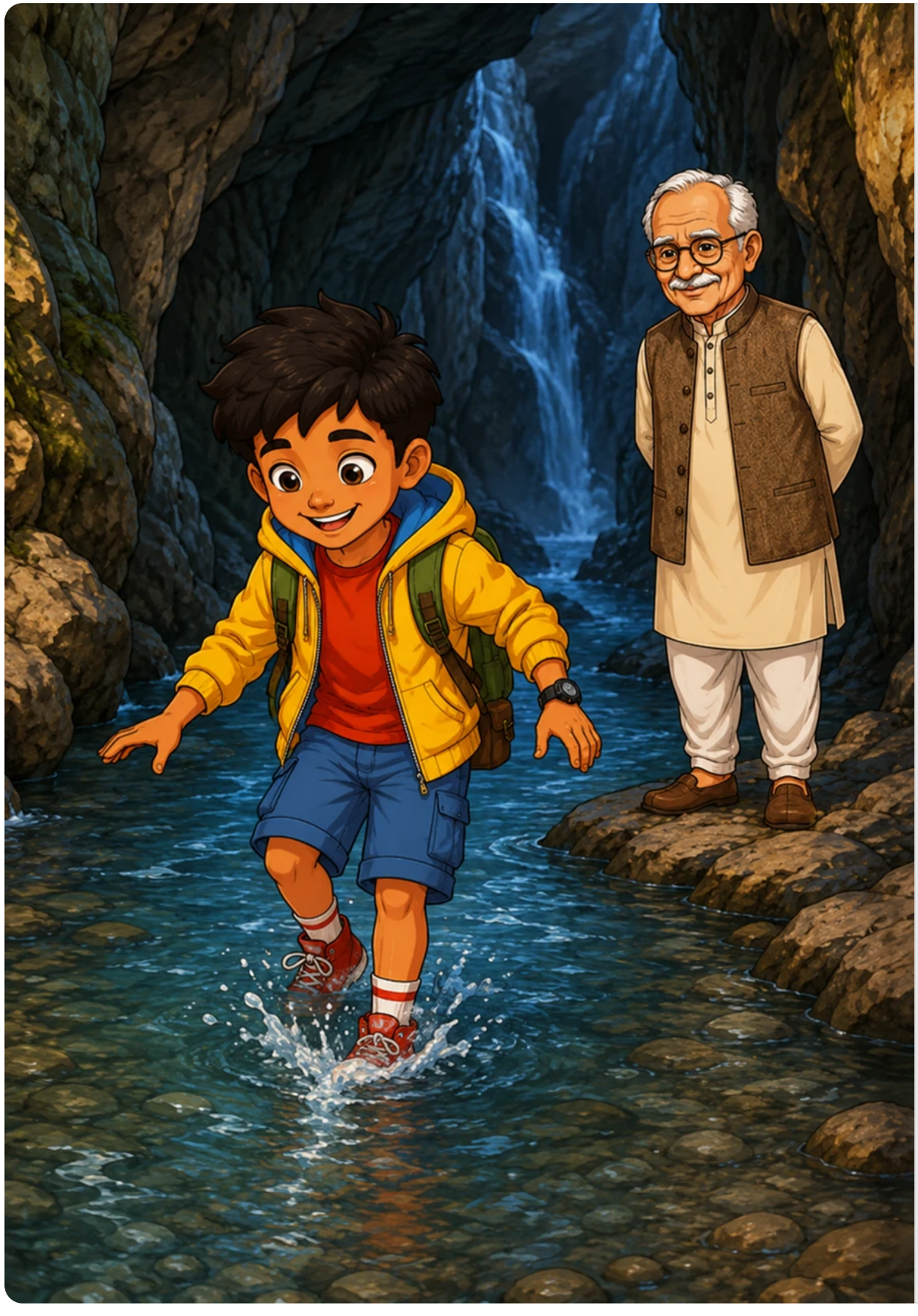

शाम के वक्त कबीर रॉबर्स केव यानी गुच्चू पानी की ठंडी गुफा के बीच बहते पानी में पैर डालता है। पहाड़ियों के बीच छिपी इस रहस्यमय जगह पर पानी के साथ खेलना उसे किसी बड़े रोमांच जैसा लगता है।

सूरज ढलने पर कबीर राजपुर रोड की ओर बढ़ता है, जहाँ पुराने पेड़ों की कतारें और औपनिवेशिक दौर की इमारतें देहरादून के समृद्ध इतिहास की गवाही देती हैं। यहाँ की ठंडी हवा में एक जादुई सुकून है।

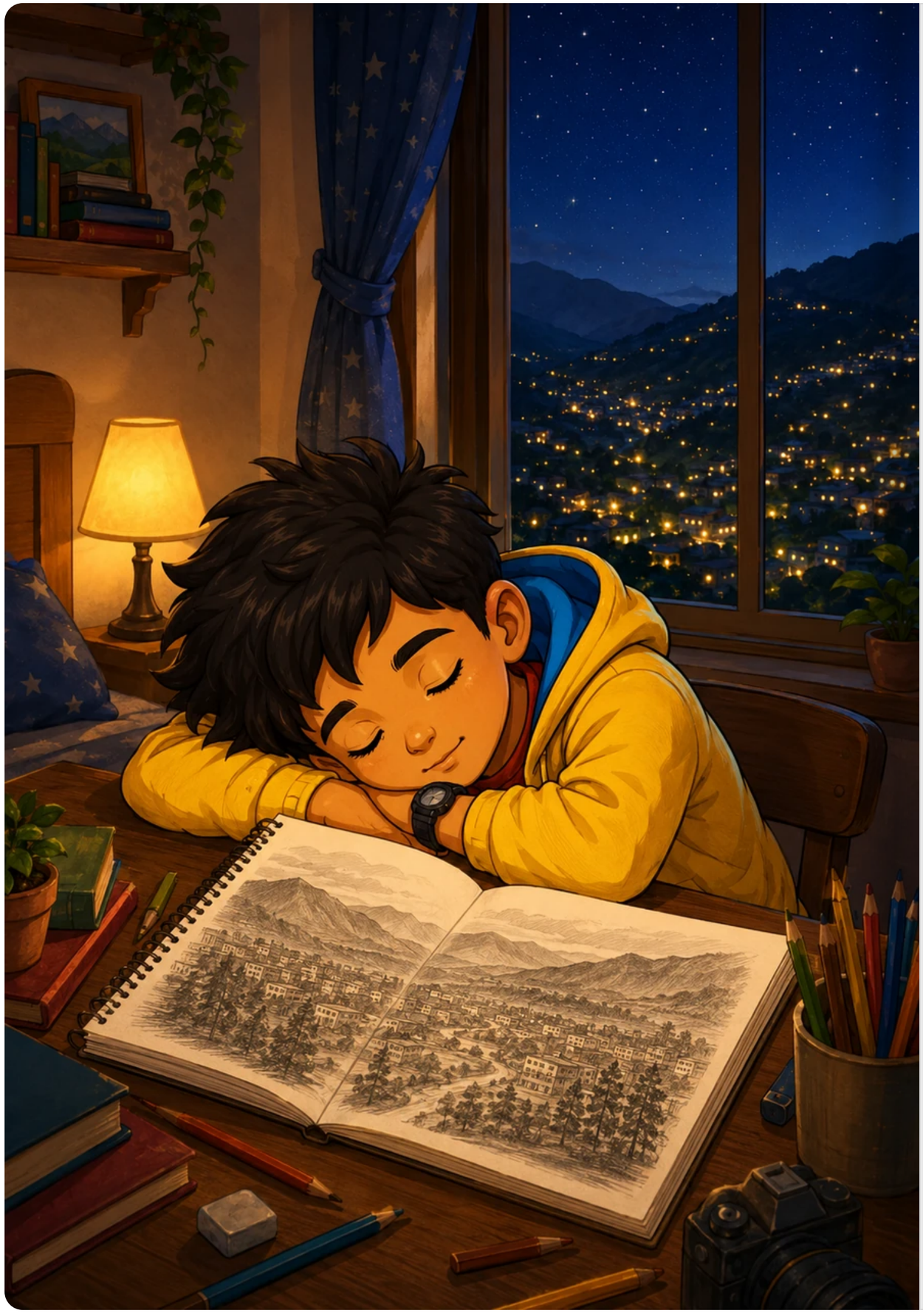

घर लौटकर कबीर अपनी डायरी में देहरादून का एक नया चित्र बनाता है। खिड़की के बाहर रात के अंधेरे में पहाड़ियों पर जलते दीये ऐ लगते हैं मानो आसमान के सितारे ज़मीन पर उतर आए हों, और कबी अपने शहर की गोद में सो जाता है।